**सम्पादकीय / Editorial**

# जिज्ञासा एवं समाधान : एक भारतीय दृष्टिकोण

# Enquiry and Solution : An Indian Approach

https://doie.org/10.0228/VP.2025881837

भारतीय मनीषा में आत्मानुसन्धान अन्तर्जगत् एवं बहिर्जगत् से सम्बद्ध अनेक प्रश्नों के उत्तरों के लिए आरम्भ से ही प्रयास किया जाता रहा है। हमारे अस्तित्व के ऐसे अनेक विचारणीय बिन्दु हैं, जिनके सम्बन्ध में अनेक स्तरों पर विमर्श होता रहा है। विश्व साहित्य का प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद भी अनेक ऐसे अनेक प्रश्नों को प्रकाशित करता है–

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सा दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(ऋग्वेद, 10/121/1)

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नंभः किमासीद् गहनं गभीरम् ।।

(ऋग्वेद, 10/129/1)

इन प्रश्नों पर गहन मन्थन एवं विमर्श हुआ तथा उपनिषद् साहित्य में हमें इनका विस्तार देखने को मिला। उपनिषद् की संकल्पना में गुरु और शिष्य का संवाद उसका प्रकर्ष है। उपनिषद् दोनों (गुरु और शिष्य) के सायुज्य से पूर्ण होता है। शिष्य के प्रश्न परम सत्ता के औन्मुख्यभाव से संयुक्त होकर निरन्तर गवेषणात्मक दृष्टि के रूप में प्रतिबिम्बत होते से दृष्टिगत होते हैं। उपनिषद् में उठने वाले प्रश्न परम सत्ता तक ही सीमित नहीं दिखते, वे जीवन के व्यावहारिक पक्ष की सम्बद्धता का उद्घाटन भी करते हैं। हमारे जीवन की दिशा कैसी हो, किस प्रकार की स्थिति में किस प्रकार की विमर्शात्मक दृष्टि होनी चाहिए, कौन है जो इस जगत् को चला रहा है, क्या इस जगत् में घटने वाली जागतिक वस्तुओं की भी भूमिका है इत्यादि। ये सभी प्रश्न उपनिषद् साहित्य में अनेक स्थानों पर विश्लेषित हैं और इन प्रश्नों के उत्तर हेतु गुरु का शिष्य के साथ किया गया विमर्शात्मक व्यापार प्रश्न और उत्तर के रूप में भासमान इस जगत् के व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक पक्षों का निरूपण करता है। उत्तर की खोज में किया जाना वाला विमर्शात्मक व्यापार इतना वास्तविक दिखता है, मानो सब कुछ हमारे सामने घट रहा हो। निश्चित रूप में यह भारत की मनीषा की ही पद्धति है, जिसमें प्रश्न करने वाला और उत्तर देने वाला दोनों वास्तविक रूप में पूर्णतः सक्रिय दिखते हैं, और दोनों की यह सक्रियता साक्षी रूप में स्थित दूर बैठे किसी तीसरे को भी आननदित कर रही होती है और वह भी उस स्पन्दन के प्रभाव से चमत्कृत होकर स्वयमेव अपने मार्ग का निर्धारण करता है।

*छान्दोग्योपनिषद्* में एक कहानी है – 'इन्द्र और विरोचन' की। इन्द्र और विरोचन दोनों एक बार प्रजापति के पास जाते हैं, यह पता करने के लिए, कि हमें क्या करना चाहिए? इन प्रश्नों के उत्तर में प्रजापति दोनों (इन्द्र और विरोचन) को बुलाकर कहते हैं कि जो आत्मा को शास्त्र और गुरु के उपदेश के अनुसार खोज कर जान लेता है, वह समस्त लोकों और कामनाओं को प्राप्त कर लेता है। वे दोनों कहते हैं कि हम उस आत्मा को जानना चाहते हैं, उसका स्वरूप कैसा है। इसके उत्तर में प्रजापति आत्मा के आठ गुणों का उल्लेख करते हैं–

1. पापशून्य
2. जरारहित

3. मृत्युरहित
4. शोकरहित
5. क्षुधारहित
6. पिपासारहित
7. सत्यकाम
8. सत्यसङ्ल्प

तत्पश्चात् इन्द्र और विरोचन दोनों परस्पर ईर्ष्या करते हुए हाथों में समिधाएँ लेकर प्रजापति के समक्ष प्रस्तुत होते हैं। उन्होंने प्रजापति के निर्देशानुसार 32 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का वास किया। तब उनसे प्रजापति ने कहा– तुम यहाँ किस इच्छा से रहे हो? उन्होंने कहा– जो आत्मा पापरहित, जरारहित, मृत्युरहित, शोकरहित, क्षुधारहित, तृषाहीन, सत्यकाम और सत्यसंकल्प है, उसका अन्वेषण करना चाहिए और उसे विशेष रूप से जानने की इच्छा करनी चाहिए। जो उस आत्मा को खोजकर उसे जान लेता है, वह सम्पूर्ण लोक और समस्त भोगों को प्राप्त कर लेता है। यह आपका ही वाक्य है। उसी आत्मा को जानने की इच्छा करते हुए हम यहाँ 32 वर्ष तक रहे हैं। उनसे प्रजापति ने कहा– यह जो पुरुष नेत्रों में दिखाई देता है, यह आत्मा है, यह अमृत है, यह अभय है, यह ब्रह्म है। इन्द्र और विरोचन के मन में फिर शङ्का हुई कि जो जल में प्रतीत होता है, दर्पण में दिखाई देता है, उनमें आत्मा क्या है? इसके उत्तर में प्रजापति ने कहा कि जो मैंने नेत्र–अन्तर्गत पुरुष का वर्णन किया है, वही सभी ओर सब में प्रतीत होता है। इसके पश्चात् प्रजापति ने उन दोनों को जलपूर्ण शकोरे में स्वयं को देखने को कहा और उनसे पूछा कि तुम जलपूर्ण शकोरे में क्या देखते हो? उन्होंने उत्तर दिया– "हम अपने इस आत्मा को लोम और नखपर्यन्त ज्यों–का–त्यों देखते हैं"। प्रजापति ने उन्हें अच्छी तरह अलंकृत होकर फिर शकोरे के पानी में देखने को कहा और पूछा– "क्या देखते हो"? उन दोनों ने कहा– "जिस प्रकार हम दोनों उत्तम प्रकार के वस्त्रों से अलंकृत हैं, उसी प्रकार ये दोनों शकोरे भी दिख रहे हैं। तब प्रजापति ने कहा कि यह आत्मा है, यह अमृत और और अभय है और यही ब्रह्म है।

इन्द्र और विरोचन शान्तचित्त होकर वहाँ से चले गए। दोनों में से विरोचन ने उसे ही सत्य समझ लिया और सभी असुरों को शरीर के ज्ञान को ही आत्मविद्या बताकर उपदेश दिया, परन्तु इन्द्र देवताओं के पास पहुँचने से पहले ही शरीर के आत्मा होने पर विचार करने लगे और अनेक प्रश्नों से अशान्त होकर, पुनः प्रजापति के पास जाकर बोले कि यदि यह सब आत्मा है और हम सुन्दर होने पर सुन्दर दिखते हैं तो फिर अन्धे होने पर अन्धे दिखेंगे, खण्डित होने पर यह आत्मा खण्डित हो जायेगा और शरीर का नाश होने पर इस आत्मा का भी नाश हो जायेगा तो यह आत्मा सत्यकाम सत्यसङ्कल्प कैसे होगा?

प्रजापति ने कहा कि हे इन्द्र! यह बात ऐसी ही है, जैसा तुम समझ रहे हो, और तुम पुनः 32 वर्ष और ब्रह्मचर्य वास करो। 32 वर्ष बाद पुनः इन्द्र प्रजापति के समक्ष उपस्थित हुए और प्रजापति ने उनसे कहा कि– जो यह स्वप्न में पूजित होता हुआ विचरता है, यह आत्मा है। यह अमृत है, अभय है और यही ब्रह्म है। इस पर इन्द्र ने फिर आत्मचिन्तन किया और आशंकित हो गए। इन्द्र पुनः प्रजापति के पास पहुँचे और कहने लगे कि यद्यपि यह शरीर अन्धा होता है, तो भी स्वप्न में वह अन्धा नहीं होता। रुग्ण होने पर भी स्वप्न में वह नीरोग दिखता है, इसके वध से उसका न तो वध होता है, न ही रुग्णता से वह रुग्ण होता है, किन्तु स्वप्न में यह ताडित होने, अप्रियता और रुदन का अनुभव करता है, तो फिर यह शुद्ध आत्मा कैसे हुआ, जो क्षुधारहित हो, पिपासारहित हो, शोकरहित हो। इन्द्र की बात सुनकर प्रजापति ने कहा, इन्द्र ऐसी ही बात है। तुम फिर 32 वर्ष ब्रह्मचर्य वास करो। इन्द्र 32 वर्ष बिताकर प्रजापति के पास जब पहुँचे तो प्रजापति ने कहा कि – 'हे इन्द्र! जिस अवस्था में

वह सोचा हुआ दर्शनवृत्ति से रहित और सम्यक् रूप से आनन्दित हो स्वप्न का अनुभव नहीं करता, वह आत्मा है'। तब फिर इन्द्र ने अपने मन में विचार किया और प्रश्न के साथ पुनः प्रजापति के पास जाकर कहने लगे – 'भगवन्! इस अवस्था में तो निश्चय ही इसे यह भी ज्ञान नहीं होता कि 'यह मैं हूँ' और न यह इन अन्य भूतों को ही जानता है, यह मानो विनाश को प्राप्त हो जाता है। इसमें मुझे कोई इष्ट फल दिखाई नहीं देता'। प्रजापति ने कहा – 'इन्द्र! यह बात ऐसी ही है। मैं तुम्हारे प्रति इसकी पुनः व्याख्या करूँगा। अभी पाँच वर्ष और तुम ब्रह्मचर्य वास करो'। वास करके इन्द्र जैसे ही प्रजापति के समक्ष पहुँचे तो प्रजापति ने कहा –'इन्द्र! यह शरीर मरणशील ही है, यह मृत्यु से ग्रस्त है। यह इस अमृत, अशरीरी आत्मा का अधिष्ठान है। सशरीर आत्मा निश्चय ही प्रिय और अप्रिय से ग्रस्त है। वायु, अभ्र, विद्युत और मेघ ध्वनि ये सब अशरीर हैं। जिस प्रकार ये सब उस आकाश से उत्पन्न होकर सूर्य की परम ज्योति को प्राप्त होकर अपने स्वरूप में स्थित हो जाते हैं, उसी प्रकार यह सम्प्रसाद इस शरीर से समुत्थान कर परम ज्योति को प्राप्त हो अपने स्वरूप में स्थित हो जाता है'। इस अशरीर रूप में आत्मतत्व की देवगण उपासना करते हैं। इसी से उन्हें सम्पूर्ण लोक और समस्त भोग प्राप्त हैं। जो इस आत्मा को शास्त्र और आचार्य के उपदेश के अनुसार जानकर साक्षात् रूप से अनुभव करता है, वह सम्पूर्ण लोक और समस्त भोगों को प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार इन्द्र और विरोचन को अपने–अपने स्तर के आधार पर ज्ञान की प्राप्ति होती है। उपर्युक्त प्रसंग में यह बताने की चेष्टा की गई है कि मन में उठने वाले यथार्थ प्रश्नों के निराकरण एवं निराकरण के मार्ग में होने वाले साक्षात् अनुभवों से ही संतोष की प्राप्ति होती है, जैसा कि इन्द्र के साथ हुआ।

इस प्रकार के अनेक प्रसंग उपनिषद् साहित्य में उल्लेखित हैं, जो मन की जिज्ञासाओं को शान्त करते हैं, परन्तु इन प्रसंगों में ध्यातव्य यह है कि जो समाधानकर्ता है, वह उन सभी विषयों का पूर्णतः अधिकारी विद्वान् है, जिनके सम्बन्ध में अनुसन्धाता के मन में प्रश्न उठते हैं, और दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रश्नकर्ता सम्पूर्ण समर्पण, विश्वास के साथ श्रद्धावनत होकर अधिकारी से प्रश्न करता है; जिसके परिणामस्वरूप वह अधिकारी विद्वान् जिज्ञासु के अज्ञानजन्य अहंकार की समस्त ग्रन्थियों को खोलकर उसे परम रहस्य का बोध कराता है। यह प्रक्रिया अधिकारी विद्वान्, शास्त्रज्ञ, गुरु तक ही सीमित नहीं रही, अपितु स्वयं शास्त्र को ही आधार मानकर अनेक प्रश्न किये जाते रहे और शास्त्र की पंक्तियों के द्वारा उनके उन प्रश्नों के सटीक उत्तर मिलते रहे, किन्तु यहाँ पर भी शर्त है– श्रद्धा की, विश्वास की। ऐसी इस शास्त्र की परम्परा में वेदों के मन्त्र, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, पुराण, आगम, त्रिपिटक, जैनागम, अवेस्ता, रामचरितमानस, गुरुग्रन्थसाहिब, बाइबिल, कुरान आदि प्रमुख हैं। इन ग्रन्थों में तुलसीदास विरचित रामचरितमानस अत्यन्त लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसमें चौपाई, दोहा और छप्पय आदि छन्दों में रामकथा को प्रस्तुत किया गया है। रामकथा के प्रस्तुतीकरण में प्रसंगवश अनेक छन्द ऐसे आते हैं, जिनको पढ़कर लगता है कि मानो वे हमारे अपने जीवन के लिए कोई सन्देश दे रहे हों, कोई सही रास्ता दिखा रहे हों, हमसे हमारी अपनी बात कर रहे हों। चौपाई और दोहा आदि उन छन्दों में उल्लेखित रामचरितमानस की पंक्तियाँ संशय के कारण उठने वाले अनेक प्रश्नों से मानो हमारे अशान्त चित्त को सन्तुष्ट कर रही हों। जैसे –

होई है सोई जो राम रचि राखा ।
को करि तर्क बढ़ावै साखा ।।

अर्थात् जब जीवन में हमें कोई रास्ता न दिखे तो भगवान् के विश्वास पर सब छोड़ देना चाहिए, वही सबका संचालन कर रहे हैं। जैसे वे संचालन करेंगे तो उसमें फिर तर्क की कोई सम्भावना ही नहीं रह जाती। इस बात से मन में यह सन्तोष अवश्य रहता है कि हमने समस्त समस्याओं के समाधान को ईश्वर पर छोड़

दिया है। हम अपना नियत कर्म करेंगे, शेष उसके परिणाम की स्थिति ईश्वर पर निर्धारित है। इसी प्रकार की मनः स्थिति को ध्यान में रखकर रामचरितमानस के अन्त में एक रामशलाका प्रश्नावली बनाई गई है, जिसमें विभिन्न कोष्ठकों में भिन्न–भिन्न चौपाइयों और दोहों के एक–एक वर्ण पृथक्–पृथक् रख दिए हैं। इन वर्णों को निश्चित क्रम के आधार पर जब मिलाया जाता है, तब कोई चौपाई या दोहा बनता है। इस रामशलाका प्रश्नावली के द्वारा जिसको जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्ति को भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करना चाहिए। तदनन्तर श्रद्धा और विश्वासपूर्वक मन में अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मन चाहे कोष्ठक में अंगुली या शलाका रख देना चाहिए और उस कोष्ठक में जो अक्षर हो उसे अलग से अंकित कर लेना चाहिए। उसके बाद प्रति नवें कोष्ठक में पड़ने वाले अक्षरों के क्रम के आधार एक चौपाई बनती है, जो प्रश्नकर्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगी।

आज हम अपना अधिकतर कार्य डिजिटल माध्यम में करते हैं। हमारे उपकरण चाहे वह कम्प्यूटर हो या मोबाइल, टैबलेट अथवा कैमरा सभी डिजिटल डेटा बनाते हैं। डिजिटल डेटा का भण्डारण बाइट्स (मेगा, गीगा, टेरा, पीटा, एक्सा इत्यादि) में होता है। प्रत्येक बाइट आठ बिट से बनी होती है और हर बिट की वैल्यू 0 (जीरो) या 1 (वन) होता है। इसे बाइनरी कोड प्रणाली कहते हैं। कम्प्यूटर इसी भाषा में हर कमाण्ड को समझता है, चाहे वह टेक्स्ट (लेखन) हो या विजुअल अथवा अनुदेश। ASCII (अमेरिकन स्टैंडर्ड कोड फॉर इंफॉर्मेशन इंटरचेंज) एक कैरेक्टर (अक्षर, नम्बर अथवा विशेष प्रतीक चिन्ह) एन्कोडिंग सिस्टम है, जो इलेक्ट्रॉनिक संचार में प्रत्येक कैरेक्टर को एक पहचान प्रदान करता है। यह इंटरनेट और कम्प्यूटर पर सूचना प्रस्तुत करने की सबसे सामान्य विधि है। ASCII कोड कम्प्यूटर, दूरसंचार उपकरण और अन्य उपकरणों में डेटा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस डेटा को हम कम्प्यूटर में क्रमिक रूप से (sequentially) संरक्षित करते हैं। प्रत्येक कैरेक्टर आठ बिट मेमोरी लेता है। प्रत्येक नौवां बिट एक नए कैरेक्टर का भाग होता है। इन सभी के संकलन से हम सूचना या निर्देश बना पाते हैं, जिसका एक तात्पर्य या अर्थ होता है। इस संकल्पना की एक अवधारणात्मक पूर्वपीठिका श्रीरामशलाका प्रश्नावली में प्रतिध्वनित होती–सी प्रतीत होती है, क्योंकि वहाँ पर भी प्रत्येक नौवें अक्षर अथवा मात्रा के संकलन के आधार पर प्रश्नकर्ता के लिए एक समाधान या दिशा–निर्देश प्रस्तुत किया जाता है। रामचरितमानस के श्रीरामशलाका–प्रश्नावली में प्रत्येक नौवें अक्षर/मात्रा का संकलन मानस में उद्धत किसी न किसी दोहे को प्रस्तुत करता है, जो प्रश्नकर्ता की जिज्ञासा को शान्त करता है। यह एक महज संयोग भी हो सकता है।

अतः जो भी अहंकारशून्य होकर पूर्ण श्रद्धाभाव से इस प्रकार की शलाका प्रश्नावलियों के प्रति मन में उठने वाले संशयों के समाधान हेतु उन्मुख होता है, उसे सम्भवतः एक आत्मिक शान्ति और सन्तोष अवश्य मिल सकता है।

प्रतापानन्द झा

pjha@ignca.nic.in